आलोचना

डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर

जन्म : 18. 04 1978

जन्म स्थान : गदग(कर्नाटक)

अध्ययन : एम.ई.एस. आर्ट्स एंड साईन्स कालेज सिरसि(उत्तर कन्नड) कर्नाटक

शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी. (हिन्दी)

पद : सहायक प्राध्यापिका, विभागाध्यक्षा हिन्दी विभाग
सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय सिरसी (उत्तर कन्नड) कर्नाटक

प्रकाशित : 1. आंचलिक उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना, 2. तुलसीदासर सरल दोहेगलु (कन्नड), 3. बिहारीलाल सरल दोहेगलु (कन्नड), 4. नन्नवरु कन्नड कविता संग्रह, 5. संत तथा शरण साहित्य की प्रासंगिकता(उप-संपादक)
राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सेमिनार में शोधालेख प्रस्तुति : 50

पुरस्कार : 1. अन्नाता प्रीतमि एवार्ड, 2. महादेवी वर्मा पुरस्कार, 3. साहित्य शिखर सम्मान अवार्ड, 4. साहित्य शिरोमणी राष्ट्रीय अवार्ड, 5. नेहरु पशुपतिओनल नेशनल अवार्ड

संपर्क : 'गजेंद्र निलय' 1 क्रास अंबागिरि, गांधी नगर सिर्सि, जिला-उत्तर कन्नड, कर्नाटक

मोबाईल : 9242067215

डॉ. महांतेश आर अंची

जन्म : 14. 03 1978, जन्म स्थान-हावेरी(कर्नाटक)

शिक्षा : एम. ए., पीएच. डी., बी. एड., पी.जी. डी. टी.

प्रकाशन : बेलगांव विभागीय हिन्दी सेवा शिक्षण समिति-हुबली, पत्रिका के संपादक, संत तथा शरण साहित्य की प्रासंगिकता(उप-संपादक), राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सेमिनार में शोधालेख प्रस्तुति-70

पुरस्कार : डॉ. रामकुमार वर्मा जी के पुरस्कार, भारत गौरव शिखर सम्मान, शरतचन्द्र चटर्जी के राष्ट्रीय पुरस्कार

पद : सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
शिवाजी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय रटीहल्ली, जिला-हावेरी

मोबाईल : 9481523327

ISBN : 978-93-89194-64-7

अप्र
नयी रचना नये विचार
अक्षर अक्षर आँखदार

हिन्दी साहित्य और नारी के रूप

डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर
डॉ. महांतेश आर अंची

अप्र

हिन्दी साहित्य और नारी के रूप

2021

संपादक

डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर

डॉ. महांतेश आर अंची

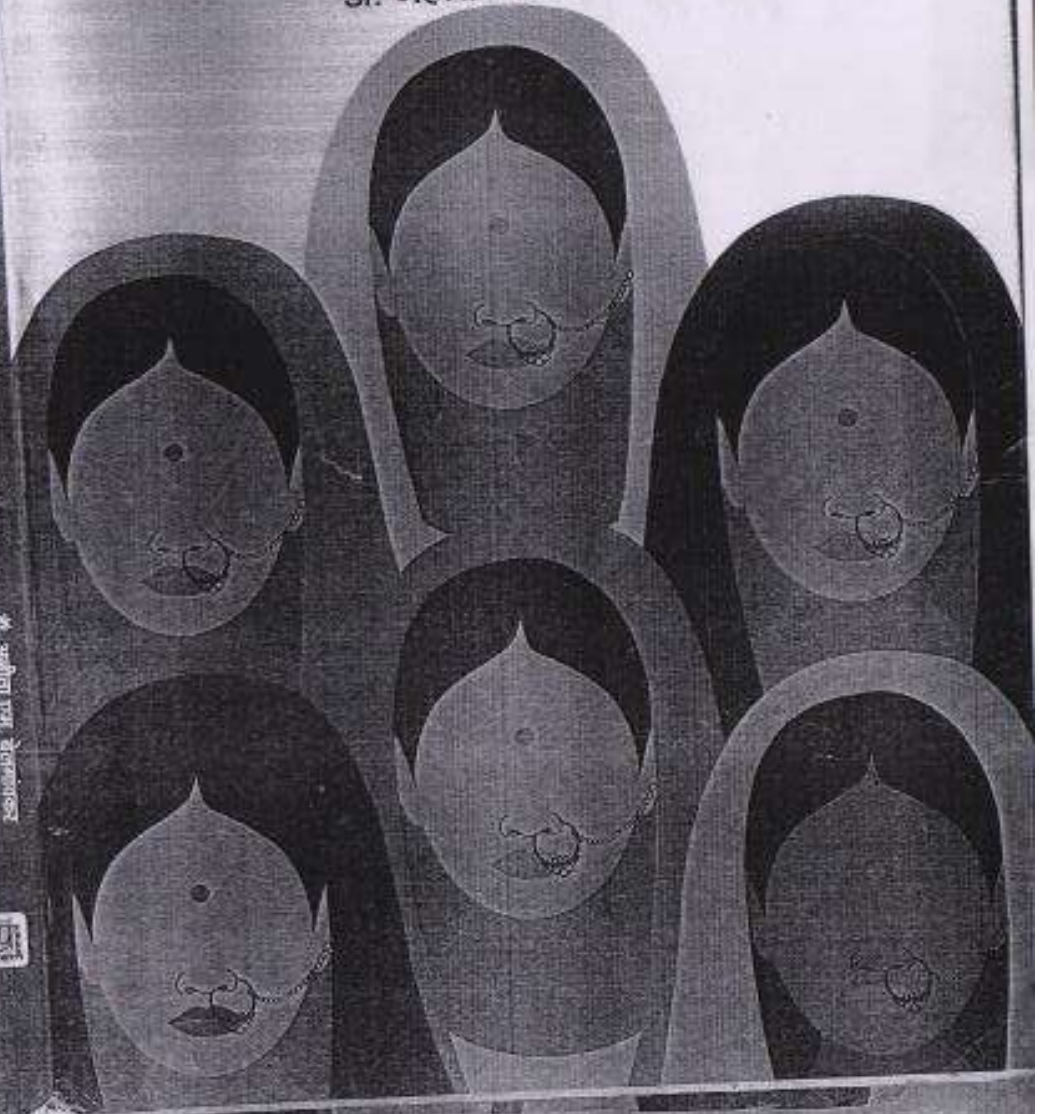

भारत के निर्माण और
योगदान हर क्षेत्र में अग्रणी
स्वतंत्रता संग्राम में झांसी
अवंती बाई, झलकारी
वीरांगनाओं ने स्वतंत्रता प्र
जनजागृति लाने के लि
न्योछावर कर दिए इसी का
डॉ. लक्ष्मी सहगल अंत रि
सुनीता विलियम्स, खेल में
कर्णम मल्लेश्वरी सायना
में बछेंदरी पाल साहित्य
चौहान, महादेवी वर्मा, रा
सुषमा स्वराज्य, उमा
अनुकरणीय सफलताएं अ

हिन्दी साहित्य और नारी के रूप

संपादक

डॉ. अनीता एम. बेलगांवकर

डॉ. महांतेश आर अंची

अभिधा प्रकाशन

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में नारी विमर्श

–श्रीमती एस.एन. होम्बाली

पुष्पाजी के साहित्य में नारी चित्रण के विविध रूप अपनाए गए आधुनिक, हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को गंभीरतापूर्वक स्थापित करने का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वह है मैत्रेयी पुष्पा इनके साहित्य में भारतीय संस्कृति के आधार पर बनी पुरानी मान्यताओं का फालन करती नारी पाई जाती है। ग्रहस्थी जीवन आर्थिक दृष्टि से पति और परंपराओं और समाज के साथ जीवनयापन करती है।

प्रेम अगर समाज की नैतिकता के परे पनपता है तो उस पर हजार बंदीश होती है पर मन तो पवन से अधिक गतिवान चलायमान है। इसे वश में करना आसान नहीं फिर मन की देह की भी अपनी जरुरतें है जिसे झुठलाया नही जा सकता। इनके साहित्य में चर्चित नायिकाएँ विद्रोहिनी है, पुरुष प्रधान समाज में नारी पर होनेवाले अन्याय के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है।

मैत्रेयी पुष्पा की नारियाँ देह पर पति का नही बल्कि अपना अधिकार समझती हुई उसे धीरज देनेवाला समझनेवाला उसकी खुबियों को जाननेवाला या उसके लक्ष्य में सहयोग देनेवाला कोई भी अधीत किसी भी जाति का निर्भीक साहसी या दिलेर योद्धा हो, उसे आनंद सरोवर में खींच लेती है, जैसे सारंग कहती है मैने लाज मानी न व्यभिचार। श्रीधर को आनंद सरोवर में खीच लिया देह पर पति के ही एकाधिकार को खारिज कर सारंग श्रीधर मास्टर को अपना शरीर सौंपती है तब उसे न पुरानी नायिका जैसा पाप बोध होता है और न श्रीधर पर एहसान मैत्रेयी की नारियो इस बात से ज्ञात कि जाति तो नारी की नहीं होती है। वह होती है तो पुरुष की। वैसे उनकी नारियाँ पतिव्रता, दैहिक प्रतिव्रता जैसे शब्द को पुरुषीयत स्वार्थी प्रवृति का

खेल समझकर नकारती है।

पुष्पाजी के साहित्य में चित्रित नारियाँ अपने परिवार और समाज की परंपरा के साथ संघर्ष करती दिखाई देती है। विजन उपन्यास की आभा नेहा को बताती है कि मुकुल प्राचीन परंपरा का प्रतिनिधि है। वह आभा को मारपीट करके गालियाँ देता है, इसी कारण वह उसे छोडकर आई है।

वर्तमान-काल की नारियों में पहले से अधिक जागरुकता और व्यवहारिक बुद्धि के बढ़ते जाने के प्रमाण मिलते है। यहा नारियाँ अधिकार और संपति के बारे में और व्यवहारिक दृष्टि से बहुत जागरुक है उदा जैसे नारियाँ दांपत्य जीवन में स्त्री की खुंटी बांधना और पुरुष के स्वच्छंद आकाश में विचरण करते पंछी की तरह मन मर्जी से छोड़ना जैसी विषमता को नकारते है यह संबंध बड़ा थोथा है तो एक तो खुंटे बांदा पांगुर, दुसरा सरभ में उड़ता पंछी। डोर और पंछी सहचर नही हो सकते। चाक नामक उपन्यास में विवाह संस्था के प्रति विद्रोह भाव अंकित है जैसे किसी बाजार में जानवर बेचते समय पुराना मालिक नये मालिक के साथ रस्सी सौंपकर चला जाता है, वैसे ही हमारे यहाँ अनेक लड़कियाँ बिना मर्जी के जीवन जीती है तो वह कुल्टा कुलक्षिणी, कलंकिनी, कलमुँही के नाम से धोषित होती है। सारंग श्रीधर से कहती है मेरा मन जिद्दी है श्रीधर जिस मर्द के साथ तेर पिता ने विदा कर दिया उस मालिक से वापिस मौंगले अपनी देह जीती जागती पाँच इंद्रियों के संग तो जानवर बेचे जाते है उन्हीं का रस्सा पकड़ाया जाता है दुसरे के हाथ। यही बात रेशम के मन में भी आई होगी तभी उसने अपना धर्म बिगाड़ के लिया। सारंग पुरुषसताक समाज के घर को भटि या रखाना समझती है। वैसे उसका अपना घर कहा है, जो भी है वह तो रंजीत का है वह जब चाहे तब नैनी को घर से मारते हुए बाहर निकाल सकता है। मेरा घर है कहाँ? रंजीत का हुक्म याद है। कुछ भी हो, घर उनका है। मुझे उसमें रहने की मोहलत है तो इसका मतलब यह नहीं कि मौं अपनी इच्छा भी चलाऊँ यहाँ रहना है तो रंजीत के हिसाब से।

विजय उपन्यास की नेहा के ससुर अपने घर में बाबा आनंदाचार्य को लेकर आती है। शरण सेंटर की शान में अभिवृद्धि करने के लिए उनका स्वागत किया जाता है। लेकिन नेहा के मन में ऐसे लोगों के बारे में विरोध है। वह कहती है नेहा का मन किसी साधुवेशी मनुष्य के पाँव छूने को नहीं करता क्यों कि उसके मत के अनुसार मनुष्य रहना ही सबसे ज्यादा सहज है। इन्सान के ऊपर चढ़ा कोई भी चोला उसे छदम लगता है इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि नेहा धर्मवादी चेतना से

अधिक मानवतावादी चेतना का समर्थन करती है।

पुष्पा जी इक्कीसवी सदी के बारे में अपने पात्रों के द्वारा अपना विचार व्यक्त करती इनके साहित्य में आनेवाले नारी शिक्षा के कारण आज हर क्षेत्र में आगे उच्च स्थर पर जा पहुँची है इसे अपने साहित्य में दिखाने की प्रयास किया है।

–श्रीमती एम.एन. होम्बाली,
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी,
पी.पी.जी. कला महाविद्यालय, गदग

हिन्दी आत्मकथाओं में नारी संघर्ष के विविध आयाम

–शेख मस्तान वली

आज हिन्दी साहित्य और समीक्षा के क्षेत्र में स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श, एवं आदिवासी विमर्श विशेष रूप से प्राधान्य पाते जा रहे हैं। इन विमर्शों में स्त्रीवादी आंदोलन अपनी हम-हुक की लड़ाई के लिए अग्र भूमिका निभा रहा है। यह आंदोलन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्य के क्षेत्र में बड़ी उथल-पुथल की चाह रखते हुए स्त्री-पुरूष समानता की माँग करता हैं।

मूलतः यह नारीवादी आंदोलन ने केवल बलात्कार, पत्नी प्रतारणा, परिवार नियोजन व समान वेतन की माँग तक सीमित है बल्कि वह सभी प्रकार की असमानता, दबाव एवं दमन का प्रतिरोध कर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समतामूलक न्यायिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था से युक्त समाज की स्थापना हेतु कृत संकल्प हैं।'

हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल में स्त्रीवादी सहित्य का लेखन होता रहा किन्तु स्त्रीवादी लेखन सन् 70 के बाद में ही जोर पकड़े हुए परिलक्षित होता है। सन् 1970 के बाद इस आंदोलन ने हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपना शिकंजा कस लिया, परंतु इसमें आत्मकथाओं का योगदान तो न के बराबर रहा। इस संदर्भ में सुमन राजे अपनी पुस्तक "हिन्दी साहित्य आधा इतिहास' में लिखती हैं-"आत्मकथा और समीक्षा का क्षेत्र भी लगभग सुना ही पड़ा है। महिलाओं की आत्मकथाओं का हिन्दी में अभाव अब एक मुद्दा बन गया है।"[1] सुमन राजे की यह शिकायत आज दूर हो गई है, क्योंकि कई हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ अब तक प्रकाशित हो गई है। जिसमें पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था द्वारा नारी पर ढ़ाए जानेवाले अन्याय, अत्याचार, विवाह संस्था की असंगतियों, पतियों